International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

हिंदी साहित्य में नारी एक वरदान या अभिशाप

Rakesh Kumar Sharma

Assistant Professor, Hindi, Government College, Bari Sadri, Chittorgarh, India

सार

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याएं देखने को मिलता है। हिन्दी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री-विमर्श का जन्म माना जाता है। महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़िया नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण है। प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरूष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप् में नहीं लिखा जिस रूप् में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लिखी है। अतः स्त्री-विमर्श की शुरूआती गुंज पश्चिम में देखने को मिला। सन् 1960 ई. के आस-पास नारी सशक्तिकरण जोर पकड़ी जिसमें चार नाम चर्चित हैं। उषा प्रियम्वदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी एवं शिवानी आदि लेखिकाओं ने नारी मन की अन्तद्वन्द्वों एवं आप बीती घटनाओं को उकरेना शुरू किए और आज स्त्री-विमर्श एक ज्वलंत मुद्दा है। आठवें दशक तक आते-आते यही विषय एक आन्दोलन का रूप ले लिया जो शुरूआती स्त्री-विमर्श से ज्यादा शक्तिशाली सिद्ध हुआ। आज मैत्रेयी पुष्पा तक आते-आते महिला लेखिकाओं की बाढ़ सी आ गयी जो पितृसत्ता समाज को झकझोर दिया। नारी मुक्ति की गुंज अब देह मुक्ति के रूप में परिलक्षित होने लगा।

यदि हम एक आदर्श समाज की स्थापना का स्वप्न साकारकरना चाहते हैं, तो हमे देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करनेवाली नारी को सारे हक - अधिकार, समानता की कसौटी पर देने होगे, क्योंकिसदियों से तमाम वेदनाओएवं वर्जनाओं बंधनों से बंधी नारी आजभी पीड़ित है, शोषित है, असुरक्षित है, उपेक्षित है। इसी नारी ने अपनीअस्मिता एवं अस्तित्व की रक्षार्थ साहित्य - सृजन करके कई मील केपत्थर स्थापित किये है, जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दीसाहित्य में नारी का योगदान अद्वितीय है, प्राचीनतम है, प्रभावी है। '' स्त्री को लेकर भारतीय साहित्य, दर्शन एवं धर्मशास्त्रों में चिन्तनकी सुदीर्घ परम्परा रही है जहाँ स्त्री की सम्पूर्ण सत्ता को भोग्या, अबला, ललना, कामिनी, रमणी आदि विशेषण के साथ हेय एवं पुरुष सापेक्ष रूपमें चित्रित किया गया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि प्राचीन एवंमध्ययुगीन सभी रचयिता एवं टीकाकार पुरुष थे। दूसरे, मातृसत्तात्मकव्यवस्था के अपदस्थ होने के बाद से समाज मेंपितृसत्तात्मक व्यवस्था काविधान रहा है। फलतः स्वाभाविक था कि पुरूष के सन्दर्भ में पुरूष दृष्टिद्वारा स्त्री को देखा जाताहै।

परिचय

यदि मानव समाज को एक गाड़ी मान लिया जाए, तो स्त्री-पुरुष उसके दो पहियों के समान हैं। स्त्री व पुरुष दोनों का सचल और सुदृढ़ होना अत्यन्त आवश्यक है। दोनों में से यदि एक भी कमजोर हुआ, तो समाज रूपी गाड़ी का संचालन कठिन हो जाएगा, इसलिए समाज का कर्त्तव्य है कि वह नारी और नर, समाज के इन दोनों पक्षों को सबल और उन्नत बनाने का प्रयत्न करे। प्राचीनकाल में भारत के ऋषि-मुनियों ने नारी के महत्त्व को भली-भाँति समझा था, जिससे उस समय नारी का सर्वांगीण विकास हुआ था। सीता जैसी साध्वी, सावित्री जैसी पतिव्रता, गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने इस देश की भूमि को अपनी क्षमता से महिमा-मण्डित किया था। इनका नाम लेते ही हमारा मस्तक गर्व से ऊँचा हो जाता है। उस समय भारत का आदर्श था—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,रमन्ते तत्र देवता।"

हिन्दी कथा साहित्य में नारी जागरुकता एवं डायरी चेतन को स्वर देने वाला लेखिका चित्र मुद्गल ने लक्षागृह, अपना वापसी, इस हमाम में, जिनावर, भूख, लपटें जैसी कहानियाॅ सामाजिक, दार्शनिक एवं आर्थिक स्थिति को निर्भीकता से उजागर किया।मुद्गल अपने कलम की धार से समाज के क्रुकरतम स्वरूप पर प्रहार करता है। महिला कहानीकारों में नमिता सिंह की कहानी निकम्मा बॉय, जंगल गाथा, खुले आकाश के नीचे, राजा का चैक आदि वेशेश है। इसी तरह मणिक मोहनी ने अपना अपना सच, अभी तराशी जारी है, अन्वेणी, छुआ आखर प्रेम की कहानी टाइप समाज का दर्शन जांच। महान कहानीकार ममता कालिया की कहानियों से छुटकारा, एक अदद और सीन नं 0 6, उनके यौवन के दावे हिन्दी लेखों की संख्या बढ़ रही है। लेखिका का मानना है कि आज संबंधों के मूल्य और अर्थ बदले नहनी बल्कि नष्ट हो गए हैं। शषि प्रभा शास्त्री की कहानियां उस दिन भी, पतझड़, अनुत्तरित, धुली हुई शाम एक टुकड़ा शान्तिरथ साहित्य जगत में अपना स्थान बना ली है। नारी के जन्म संबंधी दर्द का मार्मिक विवरण जया जादवानी की कहानी का संग्रह पैनियों के भीतर से अप्राप्य पानी में मिलता है। किस प्रकार महिला पंजीकरण की संबद्धता को जुड़कर सृष्टि क्रम को आगे समझते हैं। [1]

राजनीतिक बिन्दुओं पर पुरुषों का एकाधिकार माना जाता था। लेकिन मन्नू भण्डारी ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए आज के राजनैतिक मुखौटों को प्याज की पत्तों की तरह उधेड़ दिया है '' । भण्डारी द्वारा रचित कहानी के क्षेत्र में उन्होंने मैं हार गयी, यही

सच है , तीन निगाहों की एक तस्वीर , त्रिशंकु , रानी मां का चबूतरा आदि लोकप्रिय कहानियां लिखी। जब कहानियों की बात चल रही है तो उषा प्रियंवदा का नाम सम्मान सहित लिया जाता है। उन्होंने अपनी कहानियों में देषी - विदेषी संस्कृति की टकराहट , आदमी का अकेलापन , विघटित परिवार की छटपटाहट जैसी समस्याओं को विषेष स्थान दिया है। रिटायर्ड गजाधर बाबू के जीवन पर आधारित कहानी ' वापसी ' पर 1960 में सर्वश्रेष्ठ कहानीकार का पुरस्कार मिला। इसके अतरिक्त उन्होंने जिन्दगी और गुलाब के फूल , एक कोई दूसरा , कितना बड़ा झूठा लिखकर साहित्य के क्षेत्र में तहलका मचा दिया। कहानी के क्षेत्र में षिवानी के महत्वपूर्ण योगदान दिया है उन्होंने लाल हवेली , पुष्पहार , अपराधिनी , रतिविलाप , रथ्या , स्वंयसिद्धा लिखा। षिवानी के सम्बन्ध में अरुणा कपूर जी ने लिखा है कि - '' षिवानी की लोकप्रियता का प्रमुख कारण है - कथा तत्व एवं रस दोनों तत्व पाठक को रचना में बांधे रहते हैं। उनकी हर नायिका अत्यधिक सुन्दरी होती है और रचनाओं में वैभव का चित्रण होता है। वस्तुतः उनकी रचनाओं में वैभव के साथ - साथ सामान्य जीवन स्थिति यों का चित्रण भी हुआ है। [2]

विचार-विमर्श

नारी का जीवन बहुत ही संघर्ष से विरत है महिला साहित्यकार के लिए सबसे पहले बाहरी संदर्भो में उसका आंतरिक समय होता है जहां वो जीती है और सांस लेती है , और वही दूसरी और होती है समय की चुनौतियां जिससे वो बिलकुल परे होती है उनके जीवन वे सृजन के बीच अनवरत की स्थिति बनी रहती है , उनकी राह आसान नहीं है उनकी राह में बहुत सी विचारधाराएं वे दुविधाएं हैसाहित्य जब तक मौखिक परम्परा का हिस्सा था तब तक लेखन में स्त्रियों का योगदान बराबरी के स्तर पर रहा , परन्तु इतिहास के पन्नो में उनका जिक्र भी नहीं किया गया क्योंकि उन्हें कोई जगह नहीं मिली , अगर नारी का योगदान का मूल्यांकन साहित्य में करना हो तो वह किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। [3]

आज के दौर में महिलाओं ने पुरुष के मुकाबले साझेदारी निभाई है ! महिलाओं के अंदर बढ़ती चेतना और जागरूकता ने पारम्परिक छवि को तोडा है !! देखा जाये तो साहित्य में नारी की भागीदारी जिस तेजी से हो रही है उसे देखते हुए नारी की अभिव्यक्ति की सामर्थय पर हैरान होने वा ली कोई बात नहीं रहेगी।

भक्तिकाल में कई कवयत्रियों का उल्लेख कही कही देखने को भी मिलता है।

जैसे कि गंगा , गौरी , सीता , सुमति , शोभा , प्रभुता , उमा , कुंवरि , उबीठा , गोपाली , गणेश देवरानी , कला , लखा , कृतगढ़ी , मानुमती , सुचि , सतभामा , जमुना , कोली , रामा , मृगा , देवा , देभक्तन , विश्रामा , जुग जेवा कीकी , कमला , देवकी , हीरा , झाली , हरिचेरी पोषे भगत कलियुग युवती जन भक्त राज महिमा सब जाने जगत।
इन कवित्रियों ने कविताएं लिखी थी परन्तु इनकी कवितायेँ कहाँ गयी ये कोई नहीं जानता भक्ति काल की समस्त कवियित्रियाँ स्त्री काया जनित वेदना और विद्रोह को अभिव्यक्त करती है चाहे वो मीरा हो या लल्लेश्वरी भक्ति में भिगोई इनकी दमनकारी व्यवस्था के प्रति आक्रोश को सेहज ही पहचाना जा सकता है।
परन्तु दुःख की बात ये है की इनमे से कुछ कवयित्रियों की जानकारी है और कुछ कवयत्रियाँ मठवाद हो गयी ! उनके बारे में या उनकी लिखी कविताओं के बारे मे ं कही भी देखने को नहीं मिलता है।
जहां मीरा के लिखे पद थे तो उन्हें शायद इसलिए भी मिट्टी में दबाना संभव नहीं था क्यूंकि उनके पद राजस्थान वे अन्य नीची जातियों के घर घर में गाये जाते थे !! और यही हाल लल्लेशवरी का भी था .. वह कश्मीर से थी और घर घर मे उनकी कविताएँ गाई जाती थी।जिन कविताओं का उल्लेख हमे देखने को नहीं मिला। [5]
समय के साथ-साथ समाज परिवर्तित हुआ है। कई रूढ़ियाँ हमारे समाज में प्रचलित हुईं और नारी का महत्त्व कम होना शुरू हुआ। स्त्री देवी न रहकर विलासिता की वस्तु बनने लगी। स्त्री के प्रति श्रद्धा कम होती चली गई। विदेशियों के आगमन से इस प्रवृत्ति में और वृद्धि हुई।

जिसका परिणाम यह हुआ कि नारी घर की चहारदीवारी के अन्दर बन्द होकर रह गई। उसे न शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार रहा और न ही बोलने का। स्त्री का पुरुष के किसी भी काम में हस्तक्षेप करना अपराध माना गया। वह पुरुष की अतृप्त वासनाओं को तृप्त करने का साधन मात्र बनकर रह गई। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने नारी के उस स्वरूप का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है-
"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"
बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में सामाजिक आन्दोलन आरम्भ हुए। समाज में एक जागृति आई। राजा राममोहन राय तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा समाज की कुप्रथाओं को समाप्त करने का अभियान प्रारम्भ किया गया। साथ ही नारी समाज की ओर विशेष ध्यान दिया गया। आगे चलकर महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सामाजिक परिवर्तन की बुनियाद रखी गई।[3]

जनता ने नारी के महत्त्व को समझना शुरू किया और उसके बन्धन शिथिल होने लगे। सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पण्डित तथा इन्दिरा गाँधी जैसी महिलाओं ने आगे बढ़कर नारी समाज का पथ-प्रदर्शन किया। नारी समाज में जागृति आई। सबसे महत्त्वपूर्ण घटना यह हुई कि भारत के संविधान में नारी को पुरुषों के समान अधिकार दिए गए। इस प्रकार की संवैधानिक समता नारी को सम्भवत: पहली बार मिली।

परिणाम

वन के सभी क्षेत्रों में स्त्री ने पुरुष का साथ दिया है। साहित्य के क्षेत्र में , जहाँ महाकवियों ने साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की वहाँ महिलाओं ने भी अपनी अमूल्य कृतियों से हिंदी साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया , परन्तु वह भारत माँ का दुर्भाग्य था , कि यहाँ पुरुषों की भाँति स्त्रियों की शिक्षा - दीक्षा का अभाव रहा अन्यथा यहाँ जितने पुरुष साहित्यकार हए उनसे अधिक महिला साहित्यकार होतीं। हिंदी साहित्य में महिला साहित्यकारों का योगदान को निम्नलिखित शीर्षकों से समझा जा सकता है : [6]

i. वीरगाथा काल
ii. भक्तिकाल
   - मीराबाई का साहित्य
   - मीरा के उपरान्त
   - मुसलमान महिला साहित्यकार
ii. आधुनिक काल

i. **वीरगाथा काल**

हिंदी साहित्य का आदिकाल वीरगाथा काल कहा जाता है। यह एक प्रकार से राजनैतिक आँधी और तुफान का युग था। राजपूत राजे-महाराजे अपने-अपने अस्तित्व की रक्षा में लगे हुए थे। यवनों के भयानक आक्रमण भारतवर्ष पर हो रहे थे। और वे शनैः शनैः अपना अधिकार जमाते आ रहे थे। वह समय महिलाओं की कोमल भावनाओं के अनुकूल भी नहीं था। अत: हिन्दी साहित्य के आदिकाल में तो कोई महिला साहित्यकार प्रकाश में नहीं आई। परन्तु उसके पश्चात् अन्य सभी कालों में महिलाओं ने साहित्य की वृद्धि में यथाशक्ति योगदान दिया है।[7]

ii. **भक्तिकाल**

भक्तिकाल की मधुर एवं कोमल साहित्यिक प्रवृत्तियाँ महिलाओं की रुचि के अनुकूल थीं। इस काल में कई उच्चकोटि की महिला कवियित्रियों के दर्शन होते हैं। इन्होंने निराकार ब्रह्म और साकार ब्रह्म श्रीकृष्ण को पति के रूप में स्वीकार करके अपने अन्तर्मन की भावनाओं को कोमलकान्त पदावली द्वारा व्यक्त किया। भक्तिकालीन महिला काव्यकारों में सहजोबाई , दयाबाई और मीराबाई का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सहजोबाई चरणदास की शिष्या थी। उन्होंने निराकार प्रियतम के प्रति अनूठी उक्तियाँ कही है। प्रियतम की भक्ति - माधुरी में प्रेमोन्म त्त होकर सहजो कहने लगतीं

बाबा नगरु बसाओ ।
ज्ञान दृष्टि सूं घट में देखौ , सुरति निरति लौ लावो ।।
पाँच मारि मन बसकर अपने , तीनों ताप नसावौ ।।

दयाबाई भी चरणदास की शिष्या थीं। उनका विषय वर्णन भी सहजोबाई निराकार प्रियतम का आह्वान और विरह निवेदन दी है। मृतपाय हिंदू जाति पर इन कवियित्रियों ने अपनी रसमयी काव्य धारा द्वारा ऐसी पीयूष वर्षा की कि वह आज तक सानन्द जीवित है।

- **मीराबाई**

दयाबाई के पश्चात् मीरा का नाम आता है। मीरा भक्ति साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कवियित्री थीं। मीरा की कोमल वाणी ने भारतीय साहित्य में प्रेम और आशा से भरी हुई वह पावन सरिता प्रवाहित की जिसकी वेगवती धारा आज भी भारतीय अन्तरात्मा में ज्यों की त्यों अबाध गति से बह रही है। मीरा ने अपने अनुभूत प्रेम और विरह वेदना को साहित्य में स्थान दिया। कितना लालित्य और माधुर्य है , इनके पदों में , सभी जानते हैं। आज भारत के घर - घर में इनके पदों का आदर है। स्त्री - पुरुष सभी इन पदों को समान भाव से गाकर आज भी आनन्द - विभोर हो उठते हैं। श्रीकृष्ण के साथ मीरा का प्रेम दाम्पत्य - भाव का प्रेम था , श्रीकृष्ण उनके प्रियतम थे , जन्म - जन्म के साथी थे। [8] और वह उनकी विरहिणी प्रेयसी थी। यह स्पष्ट घोषणा करते हुए मीरा को न कोई संकोच था और न कोई लोकलाज -

मेरे तो गिरधर गोपाल , दूसरो न कोई ,
जाके सिर मोर मुकुट , मेरो पति सोई ।
सन्तन ढिंग बैठि - बैठि , लोक लाज खोई ,
अब तो बेलि फैलि गई , अमृतफल होई।।

- **मीरा के उपरान्त**

मीरा के उपरान्त हिन्दी साहित्य में छत्र वरि , विष्णु कुँवर , राय प्रवीण तथा ब्रजवासी अनेक महिला कवियित्रियों के दर्शन होते हैं। इन सभी महिलाओं ने अपनी पुनीत मधुर भावनाओं द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्धिशाली बनाने में पूर्ण योगदान दिया। विष्णु कुँवरि का सुन्दर पद उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है। इस पद में वे अपने प्रियतम भगवान श्रीकृष्ण के विरह की व्याकुलता करती हैं [8]

निरमोही कैसो हियौ तरसावै ।
पहिले झलक दिखाव कै हमकें , अब क्यों देगि न आवै ।।
कब सौं तड़फत तेरी सजनी , वाको दरद न जावै ।
विष्णु कुँवर उर में आ करके , ऐसी पीर मिटावै ।।

अकबर के शासनकाल में राय प्रवीण ' एक वेश्या थी। नृत्य और गीत के साथ वह सुन्दर कविता भी करती थी। वह महाकवि केशव की शिष्या थी। केशवदास जी ने ' कविप्रिया ' में इसका इन भी किया है। अकबर इसके रूप - लावण्य पर मुग्ध था। [8]

- **मुसलमान महिला साहित्यकारों का योगदान**

इनके बाद ताज का नाम आता है। यद्यपि ये मुसलमान थीं फिर भी इन्हें श्रीकृष्ण से प्रेम हो गया था। इनकी कविता भक्ति रस से ओत - प्रोत है। ताज श्रीकृष्ण के चरणारविंद में अपना न मन , धन समर्पित करने को उत्सुक है

सुनो दिलजानी मेरे दिल की कहानी तुम ,
दस्त हौं बिकानी , बदनामी भी सहूँगी मैं ।
देव पूजा ठानी हों नमाज हैं भुलानी ,
तज कलमा कुरान , सारे गुनन कहूँगी मैं।
साँवला सलोना सरताज सिर कुल्लेदार ,
तेरे नेह दाग में निदाग है दहूँगी मैं।
नन्द के कुमार , कुरबान तेरी सूरत पै ,
हों तो मुसलमानी , हिन्दुवानी है रहँगी मैं।[9]

ताज के पश्चात् शेख का नाम आता है। ये रंगरेजिन महिला थीं , इन्होंने एक ब्राह्मण कवि से विवाह कर लिया था और उसका नाम आलम रखा था। दोनों पति - पत्नी आनन्द से कविता किया करते थे। शेख की कविता श्रृंगार रस में अद्वितीय हैं। [9] निम्नलिखित उदाहरण पति - पत्नी के प्रश्नोत्तर के रूप में। प्रथम पंक्ति में पति प्रश्न करते हैं , दूसरी पंक्ति से शेख उसका उत्तर देती है -

कनक छरी सी कामिनी , काहे को कटि छीन ।
कटि को कंचन काटि कै , कुचन मध्य धरि दीन ।।

हिन्दी के प्रसिद्ध ' कुण्डलियाँ ' लेखक गिरधर कविराय की पत्नी का नाम ' साँई ' था। अपने पति की भाँति वे भी नीतिपूर्ण छन्दों में रचना किया करती थीं। उदाहरण देखिए -

साँई अवसर के परे , को न सहे दुःख द्वन्द्व ।
जाय बिकाने डोम घर , वे राजा हरिचन्द ।।

iii. **आधुनिक काल**

आधुनिक काल में नव - जागृति और नव - चेतना का उदय हुआ। महिलाओं की शिक्षा - दीक्षा प्रारम्भ हुई उनके हृदय में नवीन भावनाओं ने जन्म लिया। साहित्य की सभी विधाओं पर महिलाओं ने लेखनी चलाई। आधनिक युग की महिला कवियित्रियों में प्रथम नाम श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान आता है। इन्होंने देश - भक्ति पूर्ण रचनायें की। झांसी की रानी ' तथा ' वीरों का कैसा हो वसन्त ' इनकी अत्यन्त प्रसिद्ध रचनायें हैं। इनकी रचना का एक उदाहरण देखिए -

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने प्रकटी तानी थी।
बूढ़े भारत में भी आई , फिर से नई जवानी थी।।
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी।
दूर फिरंगी को करने की , सबने मन में ठानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

इसके अनन्तर छायावादी युग की प्रमुख कवियित्री महादेवी वर्मा का नाम आता है। महादेवी जी के गीत अपनी सहज सहनशीलता , भावविधता के कारण सजीव हैं। विरह की आग में अनजान कविता उनके हृदय से बह निकलती है। [10]

यह ठीक है कि नारी की स्थिति में कुछ सुधार हुआ है, किन्तु यह सुधार अभी तक अपेक्षित नहीं कहा जा सकता है। इसमें सन्देह नहीं है कि ग्रामीण समाज में भी स्त्री-शिक्षा में काफी प्रगति हुई है। आशा है कि कुछ ही समय में भारत सभी बालक और बालिकाएँ शिक्षित होंगे। उस शिक्षित समाज में पुरुष और नारी एक-दूसरे के महत्त्व को समझेंगे। वह दिन दूर नहीं जब भारत में नर और नारी दोनों समान रूप से उन्नति के पथ पर साथ चलेंगे।[7]

नारी के विकास के बिना यह समाज अधूरा है। जैसे पत्नी पति की अर्धांगिनी है, ठीक उसी प्रकार नारी समाज सम्पूर्ण समाज का आधा हिस्सा है और आधे अंग के अस्वस्थ तथा अविकसित रहने पर पूरा शरीर ही रोगी तथा अविकसित रहता है। यदि पुरुष शिव है, तो नारी शक्ति है यदि पुरुष विश्वासी है, तो नारी श्रद्धामयी है। यदि पुरुष में पौरुष है, तो नारी में ममता है अर्थात् किसी भी दृष्टि से नारी पुरुष से कम नहीं है। वह पुत्री के रूप में पोषणीय, पत्नी के रूप में अभिरमणीय तथा माता के रूप में पूजनीय है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने भारतीय नारी की इसी महिमा का वर्णन इन पंक्तियों के माध्यम से किया है

"अंचल के सुकुमार फूल को, वह यों देख रही है
फूट पड़ी हो धार दूध की ज्यों ही भरे नयन से
वीर, धनी, विद्वान्, ग्राम का नायक, विश्वविजेता
अपनी गोदी बीच आज वह क्या-क्या देख रही है?"

अत: आज नारी की गरिमा के संरक्षण की अत्यन्त आवश्यकता है तभी देश वास्तविक रूप से प्रगति कर सकेगा।[5]

निष्कर्ष

कहने का तात्पर्य यही है कि हिन्दी साहित्यमें नारी का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहा है , बातचाहे समाज या परिवार को आदर्श स्वरूप में समर्पितकरने की हो या नारी वर्ग को पुरूष की दोहरी एवंसंकुचित मानसिकता के खिलाफ रचनात्मक , सकारात्मक एवं सृजनात्मक साहित्यिक क्रांति काशंखनाद करने की हो , नारी का योगदान सदैवअविस्मरणीय एवं वंदनीय रहा है।[10]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. सी. क्रामाराय ; डी। स्प्लेंडर (2016) । महिलाओं का रूटलेज इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया: वैश्विक महिला मुद्दे , रूटलेज , आईएसबीएन: 0-415-92091-4 ।
2. बी अमीन (2015) । ताहिरीह: कविता में एक चित्र। कालीमत प्रेस। लॉस एंजिल्स। आईएसबीएन: 1- 890688-36-3 ।
3. अफरी , जेनेट (2019) । आधुनिक ईरान में यौन राजनीति। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस , आईएसबीएन: 978-1-107-39435-3 ।
4. डी. हामिद (2015) । फारसी साहित्यिक मानवतावाद की दुनिया , हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस , आईएसबीएन: 978-0-674-07061-5 ।
5. बेहबहानी , एस। (2015) । मजमुआ-आई अशर (फारसी) , मुआसे-आई इंतेशरत निघा , तेहरान , आईएसबीएन: 964-351-212-9 ।
6. गोलबन , एम। (2017) । बहार और फ़ारसी साहित्य , तीसरा संस्करण , अमीर कबीर , तेहरान
7. डोजेल , ई। वैन (2018) । इस्लामिक डेस्क संदर्भ , ब्रिल , लीडेन , न्यूयॉर्क , कोलन , आईएसबीएन: 90-04-09738-4 ।
8. अहमद , टी. (2018). ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ फारसी लिटरेचर , नाज पब्लिशिंग सेंटर , कलकत्ता।
9. हेगलैंड , एमई (2019) । वीमेन एंड द ईरानी रेवोल्यूशन: ए विलेज केस स्टडी , डायलेक्टिकल एंथ्रोपोलॉजी , नंबर 15 ।
10. इशाक , एम। (2016) । आधुनिक फ़ारसी कविता। रिपन प्रिंटिंग प्रेस , कलकत्ता।